भ्रष्टाचार से लड़ाई में आधुनिक तकनीक का महत्व

प्रगति सैनी
रुड़की

'भ्रष्टाचार क्या है ? समझना नितान्त आवश्यक है इसके बाद में ही इससे लड़ाई लड़ी जा सकती है। **भ्रष्टाचार से तात्पर्य है कि वह भ्रष्ट आचरण जिससे व्यक्ति, समाज अथवा राष्ट्र प्रभावित होता है।** आज के युग में यदि हम गौर से देखें तो **भ्रष्टाचार समाज में संक्रामक रोग या महामारी की तरह फैल गया है।** अधिकांश अधिकारी, कर्मचारी इससे पूरी तरह प्रभावित हो रहे हैं। आज शासन प्रशासन में भ्रष्टाचार चरम पर है। हम यह देखते हैं कि इस भ्रष्टाचार को लोगों ने **सुविधा'** का नाम देकर प्रचलित कर दिया है। जिस आधार पर यह व्यापक रूप ले चुका है।

भ्रष्टाचार व्यक्ति की मानसिक विकृति है, स्वार्थ की परिणति है, धनलोलुपता का व्यक्तिगत संकेत हैं। समाज में एक दूसरे की देखा–देखी भौतिक साधनों की चकाचौंध व्यक्ति को इस ओर आकर्षित करती है। यह स्वाभाविक बात है कि जब व्यक्ति की जिज्ञासा धन के एकत्रीकरण की ओर लगती है तो व्यक्ति इस ओर पूर्णरूप से अन्धानुकरण की नीति अपनाता है, वह अपने–पराये की सीमा का भी उल्लंघन कर देता है। मानवीय धारणाएं आर्थिक रूप से एक दूसरे से प्रतिस्पर्धात्मक हो जाती हैं जो एक दूसरे से आगे निकलने की पिपासा जगा देती हैं और व्यक्ति अन्धा होकर भ्रष्टाचार के मार्ग पर बढ़ना प्रारम्भ कर देता है।

भ्रष्टाचार एक मानसिक विकृति है। यदि हम भ्रष्टाचार मुक्त होना चाहते हैं तो सर्वप्रथम मानसिक शुद्धिकरण करना आवश्यक है। आज भ्रष्ट नेता, अधिकारी, कर्मचारी, जन–प्रतिनिध आदि को किसी अन्य तकनीक से नहीं समझाया जा सकता है उसके समक्ष तो एक आदर्श स्वरूप प्रदर्शित करना पड़ेगा। गत वर्षों में यह देखा गया है कि इस भ्रष्टाचार के विरूद्ध भूख हड़ताल हुई, अनशन हुए, धरना–प्रदर्शन आदि बड़े–बड़े कार्यक्रम आयोजित किए गये। उनका आंशिक प्रभाव भी पड़ा किन्तु पूरी तरह हम आश्वस्त नहीं हुए कि इन साधनों द्वारा भ्रष्टाचार से मुक्त हुआ जा सकता है। हमने देखा कि सामाजिक कार्यकर्ता आज **अन्ना हजारे जैसे ईमानदार व्यक्ति ने भ्रष्टाचार के विरूद्ध बिगुल बजाया** उनके साथ जनता जुड़ी कुछ अधिकारी जुड़े और बड़े–बड़े भाषणों द्वारा समाज को भ्रष्टाचार मुक्त करने के साधन बताए गये। विदेशी बैकों में भ्रष्टाचार से जमा धन पर कुछ राजनीति हुई, उसमे आंशिक सफलता भी प्राप्त हुई।

इस आन्दोलन से मानसिक, आत्मिक बौद्धिक बल का प्रभाव दिखाई दिया। **अन्ना हजारे अनशन पर बैठ गये अपने शुद्ध विचार, विचार धारा के आधार पर भ्रष्टाचार से जूझते नजर आए,** पर विडम्बना यह हुई कि इस आन्दोलन पर भी भ्रष्टाचार की काली छाया पड़ गयी। कुछ सरकारी सेवानिवृत्त अधिकारी अपने स्वार्थ को लेकर इस आन्दोलन से जुड़ गये और खूब नाम कमाया। बेचारे अन्ना इस बात को नहीं समझते थे कि ये अधिकारी इस आन्दोलन से क्यों जुड़े वे तो बेचारे शुद्ध आत्मा व शुद्ध विचारों से इस कार्य में लगे थे। उन लोगों ने अपना स्वार्थ साधा। अन्ना के बहाने अपनी राजनीति चमकायी और अन्ना को ही धोखा देकर राजनीति के भ्रष्ट अखाड़े में कूद पड़े। आज वे लोग राजनीति को भी जीवन का आधार मानकर अलग–अलग पार्टियों से जुड़ गये और चुनावी रणनीति के अंग बन गये। आज उसमें कुछ मंत्री बनकर अपना उल्लू साधने में लग गये हैं।

मेरा मानना है कि जब तक शुद्ध हृदय से हम शुद्धाचरण नहीं करेंगे तब तक भ्रष्टाचार समाप्त नहीं हो सकता। जब तक मन में स्वार्थ है, धनलिप्सा है, बेईमानी की लीक पर चल रहे हैं, भ्रष्टाचार कैसे रोका जा सकता है ? आज की राजनीति तो भ्रष्ट आचरण से प्रभावित हो रही है ! सभी ने जीवन का एक ही उद्देश्य समझ लिया है कि **येनकेन प्राकरेण धन कमाकर अपना ऊंचा**

स्थान बनाना है, चाहे झूठ बोलकर धोखा देकर ही धन कमाना हो। यदि हम आज की राजनीति को देखें जिसके आधार पर प्रधान से लेकर ऊपर तक धन कमाने की होड़ लगी है यदि हम राजनीति की बात करें तो हम कह सकते हैं कि राजनीति एक ऐसा गन्दा तालाब है जो भी इस तालाब में स्नान करेगा निश्चित उसके शरीर पर उस तालाब के जल का कुप्रभाव अवश्य पड़ेगा।

इस भ्रष्टाचार को कोई विदेशी शक्ति दूर नहीं कर सकती, कोई वैज्ञानिक तकनीकी भी दूर नहीं कर सकती यदि भ्रष्टाचार को दूर करना है तो प्रत्येक व्यक्ति को अपना हृदय शुद्ध करके कार्य करना होगा कोई आन्दोलन भी इसे दूर नहीं कर सकता है। केवल शुद्ध भावना इसे दूर कर सकती हैं हम सब लोग बात–बात में भारतीय संस्कृति की दुहाई देते हैं व्यवहार में, कार्यपद्धति में शिक्षा से व्यावसायिकता में, किन्तु यदि ध्यान से देखा जाएगा तो भारतीय संस्कृति की दुहाई देने वालो में **आचार्य चाणक्य, स्वामी विवेकानन्द, ईश्वरचन्द, विद्यासागर, सुभाग** जैसे महापुरूषों के चरित्र से शिक्षा लेनी पड़ेगी तभी भारतीय संस्कृति का दोष प्रकाशित हो सकता है और भारत में फैले भ्रष्टाचार का अन्त हो सकता है।

आज हम देखते हैं कि मनुष्य में पैसे की भूख बढ़ती जा रही है प्रतिस्पर्धा की भावना समाज को अपने शिकंजे में जकड़ रही है। जिस कारण भ्रष्टाचार पराकाष्टा पर पहुंच गया है, आज मनुष्य का सन्तोष समाप्त हो गया है। सन्तोष के स्थान पर धनागम की भावना बलवती हो गई है। **हमारी संस्कृति में लिखा हैं–**

गोधन, गजधन, बाजीधन और रतनधन खान ।
जब आवे सन्तोष धन, सब धन धूरि समान ।।

जब तक हमारे मन में यह भाव नहीं आयेगा तब तक सुख–शान्ति से जीव नहीं चलेगा जिन पर हम साधारण लोग विश्वास करते हैं वे लोग ही हमने बिकते देखे हैं। वे अपने अस्तित्व को लेशमात्र की शुद्धाचरण कर पग डण्डी पर नहीं चला सकते। उनके लिए ईमान का कोई ध्यान नहीं होता वे अपना ईमान बेचकर भ्रष्ट मार्ग का अवलम्ब लेना ठीक समझते हैं उन्हें अपनी प्रतिष्ठा का भी ध्यान नहीं रहता।

मानव को चाहिए कि अपनी प्रतिष्ठा का ध्यान रहे,
धन तो हाथ का मैल है, इसलिए क्यों अपमान सहे।

मैं यह कहना चाहती हूं कि यदि हम राजनेता, हर अधिकारी, हर कर्मचारी अपने कार्य से, अपनी दिनचर्या से, अपनी कर्तव्यनिष्ठा से और ईमानदारी से समाज में हर जगह पर अपना आदर्श प्रस्तुत करें और स्वयं को जनमानस के लिए स्वच्छ छवि प्रस्तुत करें तो समझो कि इस भ्रष्टाचार के दानव पर अंकुश लग सकता है। यदि एक व्यक्ति स्वयं मद्यपान करता है और सबसे कहता है कि मद्यपान मत करो तो उसकी बात को कौन मानेगा। पहले उस व्यक्ति को ही स्वयं मद्यमान को त्यागना होगा और अपना स्वच्छ आचरण जनता के समक्ष प्रस्तुत करना होगा तभी निश्चित रूप से उसका प्रभाव पड़ेगा और व्यक्ति में शुद्धाचरण की भावना बलवती होगी।

किन्तु आज ऐसा नहीं दिखाई दे रहा, हर व्यक्ति अपने–अपने स्थान पर उचित या अनुचित साधन से धन कमाने में लगा हुआ है अधिकारी, कर्मचारी रंगे हाथों पकड़े जाते हैं, जेल में भेज दिए जाते हैं। नेताओं की सम्पत्ति की कोई सीमा नहीं है कुछ तो शासन ने स्वयं ही इस प्रकार बन्दर बांट कर रखी हैं जिससे भ्रष्टाचार को बल मिल रहा है। यदि सरकार इस बन्दरबांट पर अंकुश लगाये तो भी कुछ लाभ हो सकता है। कुछ विभाग तो ऐसे हैं जिन्हें सरकार अप्रत्यक्ष रूप से भ्रष्टाचार करने के लिए प्रेरित करती है। शिक्षा को एक पवित्र क्षेत्र माना जाता है। शिक्षक व छात्र का अटूट सम्बन्ध केवल शिक्षा ही होती है किन्तु आज शिक्षा का क्षेत्र भी भ्रष्टाचाार से वंचित नहीं

रहा, कई प्रकरण भ्रष्टाचार से अछूते नहीं रहे तो बताइए भ्रष्टाचार को रोकने की क्या तकनीक है ? स्पष्ट उत्तर है शुद्ध एवं समाज पर शिक्षा होनी चाहिए कबीर के शब्दों में–

गुरू कुम्हार, शिख कुम्भ है गढ़–गढ़ काठे खो ।
भीत–भीत हाथ संसार के, बाहर मारे चोट ।।

किन्तु आज शिक्षा का स्तर पूर्ण रूप से देखा जा रहा है जब शिक्षा जैसा पावन क्षेत्र ही भ्रष्ट रंग में रंग गया तो औरों के विषय में क्या कहें। जब अधिकारी है तो लिपिक भी भ्रष्ट होगा। सेवक भी भ्रष्टाचार पर राही होगा। सर्वप्रथम उस अधिकारी को ही अपना आचरण, व्यवहार, कर्तव्यनिष्ठा शुद्ध करके अपना आदर्श प्रस्तुत करने के लिए आगे आना होगा जिससे उसका आदर्श स्वरूप स्वयं में शुद्धता का प्रतिबिम्ब हो।

जब भारत स्वतन्त्र हुआ तब राजनेता अधिकारी के मत से भारतीयता का शुद्ध आचरण प्रतिबिम्बित होता था सब कार्य सुचारू रूप से जनहित के लिए किये जाते थे, सभी में आत्मीयता सौहार्दपूर्ण वातावरण था एक दूसरे के प्रति समरसता थी दुख–सुख में भागीदारी समझी जाती थी किन्तु आज इन गुणों का अभाव दिखाई दे रहा है। मन की शुद्धता, हृदय की पवित्रता, कार्य की प्रतिबद्धता जनहित की भावना का ध्यान रखकर यदि कार्य किया जायेगा और स्वयं अपने स्वच्छ कार्य से आदर्श प्रस्तुत किया जाए तो निश्चित रूप से भ्रष्टाचार पर अंकुश लग सकता है और जनता पूर्ण स्वतन्त्रता का लाभ उठा सकती है। त्याग समर्पण का भाव जनता के पटल पर अंकुरित करना पड़ेगा। धन लिप्सा का त्याग करना पड़ेगा। इस मत के अनुसार–

ईशावास्यनिदं संर्व यत्किंचित जगत्यां जगत ।
तेन व्यकतेन भुज्जी धाग मा गृधः कस्यास्विद्रनम् ।

अर्थात इस संसार में जो कोई विद्यमान दिखाई दे रहा है वह सब ईश्वर की सत्ता से परिपूर्ण है इसलिए हे मानव ! तू इस सृष्टि की प्रत्येक वस्तु का भोग त्याग की भावना से कर और कभी भी कहीं भी किसी के धन को ग्रहण करने की इच्छा मत कर, यह भावना ही भ्रष्टाचार से मुक्ति दिला सकती है।